गोपाष्टमी आई है

गोपाष्टमी आई है
धुन : (1) यह इश्क का जादू है सिर चढ़के बोलेगा
(2) माता के मंदिर को सोने का

गो-बछड़े शिंगारो, गोप-अष्टमी आई है ।
गोचारण को जाना, मेरे कृष्ण कन्हाई है ॥

गो पंच-गव्य देती, गो विश्व की माता है ।
गो माता से हमरा, जन्मों का नाता है ॥
गो-सेवा, गो-पूजा, सब से फलदाई है

- गो-बछड़े

  लाखों ही गैया है, बाबा की गोशाला ।
  यशुदा-सुत नंद लाला, बन गए गोपाला ॥
  बड़ा शुभ महूर्त है, शुभ शुभ घड़ी आई है
- गो-बछड़े

  मंगलधुन बाज रही, बजे शंख नगारे है ।
  गोमात गोपाला के गूंजत जयकारे हैं ॥
  नाचो झूमो गावो बजी ढोल शनाई है
- गो-बछड़े

  कहै 'मधुप' ग्वालों संग, निकला नंदलाला है ।
  आगे गो बछड़े हैं, पाछे गोपाला है ॥
  होठों पर घर कान्हा, बांसुरिया बजाई है
- गो-बछड़े

कवि : सुप्रसिद्ध लेखक एवं संकीर्तनाचार्य श्री केवल कृष्ण 'मधुप' (मधुप हरि जी महाराज) अमृतसर (9814668946)

https://bhajanganga.com/bhajan/lyrics/id/36914/title/Gopashtmi-aayi-hai

अपने Android मोबाइल पर BhajanGanga App डाउनलोड करें और भजनों का आनंद ले |